नीड एवं ग्रीड

प्रो. (डॉ.) सोहन राज तातेड़,

पूर्व कुलपति, सिंघानिया विश्वविद्यालय, राजस्थान

वसुधैव कुटुम्बकम् की अवधारणा नीड एवं ग्रीड की अवधारणा पर आधारित है। नीड एवं ग्रीड के अन्तर को समझे बिना मनुष्य आगे नहीं बढ़ सकता। समाज में गरीब और अमीर की खाई को यह समाप्त कर देता है। आत्मविज्ञान कार्यक्रम में मनुष्य बाहरी जगत् से आन्तरिक जगत् की यात्रा करता है। आंतरिक जगत् से सम्बन्ध बैठाना नीड है, और बाह्य जगत् में अधिक आसक्ति रखना ग्रीड है। जब आत्मा केन्द्र में होती है और जड़ परिधि में रहता है तो मनुष्य का चिंतन सम्यक् रहता है। नीड का अर्थ है आवश्यकता। आवश्यकता की पूर्ति करना सभी मनुष्यों का कार्य है। आवश्यकता से अधिक संग्रह करना अतिसंग्रह है। मानव की मूलभूत आवश्यकता है रोटी, कपड़ा, मकान, शिक्षा और चिकित्सा। इसकी पूर्ति सभी को करनी चाहिए। जीवन को आराम से चलाने के लिए वस्तुओं की आवश्यकता होती है। मानव की इच्छापूर्ति न होने से वह अशांत हो जाता है। अनुकूल और प्रतिकूल परिस्थितियों में सम रहने से मानव शांति प्राप्त करता है।

ग्रीड का अर्थ है लालच। जड़ वस्तुओं के प्रति लालसा अशांति को उत्पन्न करती है। लोभी व्यक्ति अतिसंग्रह करता है। अतिसंग्रह करने से दूसरे व्यक्ति का हक छीना जाता है। दूसरों के अंश को छीनना, दूसरों को वंचित करना आदि कार्य अतिसंग्रह के कारण होते हैं। अतिसंग्रह करने से वस्तुओं की कमी होती है। इससे समाज में तनाव और अशांति पैदा होती है। अधिक धन की सुरक्षा करना भी कठिन कार्य है। अतिसंग्रह करने से ऊंची–ऊंची कई अट्टालिकाएं बनाकर उसकी सुरक्षा करना कठिन कार्य है। आज कहीं–कहीं ऊंची–ऊंची अटलिकाएं हैं तो दूसरी तरफ घासफूस की टूटी–फूटी झोंपड़ी दिखाई देती है। जब गरीब का खून चूसा जाता है तभी कोई व्यक्ति अतिसंग्रह कर सकता है। व्यक्ति को संतोष धारण करना चाहिए। संतोषरूपी धन प्राप्त हो जाने पर अन्य सभी धन धूलि के समान प्रतीत होने लगते हैं।

अतिसंग्रह करने वाला व्यक्ति बंधन में फंसता है। लालच के घेरे से ऐसा व्यक्ति निकल ही नहीं पाता। उसके परिवार में भी संतुलन बिगड़ जाता है। धन के ऊपर सभी की निगाहें लगी रहती हैं। धन के बटवारे को लेकर भाइयों–भाइयों में कलह छिड़ जाती है। धन की लालसा प्रेम और स्नेह को समाप्त कर देती है।

कलुषित मनोवृत्ति लोभ के कारण होती है। लोभ के कारण आसक्ति उत्पन्न होती है। मोह का वटवृक्ष बहुत बड़ा है। अच्छाइयां गुणों का परिवार है और बुराइयां मोह का परिवार है। धन कुछ है, सबकुछ नहीं। धन एक साधन है साध्य नहीं। नियम कानून का पालन करते हुए संग्रह करना चाहिए। परिग्रह एक भावना है। परिग्रह का अर्थ है। चारों तरफ से ग्रहण करना। अपरिग्रह इसका विपरीत है। अपरिग्रह में आवश्यकता से अधिक नहीं ग्रहण किया जाता। अतिसंग्रह करना अशांति का कारण होता है। सही तरीके से अर्जित किया गया धन परिवार, समाज और राष्ट्र की सुरक्षा कर सकता है।

अर्जन और विसर्जन संतुलन का सूत्र है। अर्जन का अर्थ है कुछ कमाना और विसर्जन का अर्थ है जो कमाया गया है, उसका कुछ अंश दान में देना। मानव जीवन से लेकर प्रकृति पर्यन्त यह नियम लागू रहता है। सृष्टि में भी यह संतुलन दिखायी देता है। सम्पूर्ण सृष्टि संतुलन के आधार पर चल रही है। अगर संतुलन गड़बड़ा जाये तो जीवन में या सृष्टि में असंतुलन आ जाता है। सृष्टि के असंतुलन का अर्थ है भूकम्प आना, सुनामी आना और प्रकृति का प्रकोप हो जाना। इसके अनके कारण है। मानव प्रकृति का अंधाधुंध दोहन कर रहा है। वृक्ष कटते हुए चले जा रहे हैं। उनके स्थान पर नये वृक्षों का रोपण नहीं हो रहा है, जिससे प्रकृति में असंतुलन दिखलाई दे रहा है। अगर यही प्रक्रिया जारी रही तो मानव जीवन दूभर हो जायेगा।

भारतीय जनमानस की सभी परम्पराएं यह स्वीकार करती हैं कि यह सृष्टि अनेक तत्वों से बनी हुई है, उसमें अर्जन और विसर्जन दोनों तत्व समान रूप से कार्य कर रहे हैं। प्रकृति ने मानव को उपभोग के लिये एक अक्षय खजाना दिया है। यदि इसका सदुपयोग किया जाय तो यह समाप्त होने वाला नहीं है, किन्तु यदि इन तत्त्वों का दुरुपयोग किया जाएगा तो समाप्त भी हो जायेगा और मानव के अस्तित्त्व के लिये संकट भी उपस्थित हो जायेगा। प्रकृति के इस कोश

से मानव जितना ग्रहण करे अर्थात् अर्जन करे, उतना देने का अर्थात् विसर्जन का भी प्रयास करे तो लेन–देन में सन्तुलन बना रहेगा और दोनों के अस्तित्व की भी रक्षा होती रहेगी।

उपभोक्तावादी संस्कृति के बढ़ते प्रभाव के कारण मनुष्य अपने पुराने आदर्शों और परम्पराओं को भूलकर अर्जन अधिक और विसर्जन कम कर रहा है। आवश्यकता से अधिक अर्जन दूसरों के हिस्से पर अधिकार करना है। यदि साधन सम्पन्न व्यक्ति अधिक अर्जन करता रहेगा तो समाज में गरीबी बढ़ेगी, लूट, खसोट, भ्रष्टाचार, दुराचार बढ़ेगा। इससे समाज में अराजकता फैलेगी। इसलिए ज्ञान, दान, पद प्रतिष्ठा का अर्जन और विसर्जन दोनों होना चाहिए। आवश्यकता से अधिक अर्जन पाप है। यह मनोवृत्ति सभी मनुष्यों में होनी चाहिए। ग्रीड से एक व्यक्ति का पेट भर सकता है लेकिन हजारों लोग वंचित रह जायेंगे। इसलिए हमारे देश के महापुरुषों ने इच्छा परिमाण की बात कही है।